Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 4 | ISSN : 2581- 6306

नासिरा शर्मा की कहानियों में अभिव्यक्त : स्त्री दृष्टि

ममता यादव

(नेट / जे0आर0एफ0)

शोध छात्रा, हिन्दी विभाग,

पी0जी0 कालेज, गाजीपुर

(सम्बद्ध : वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, उ0प्र0)

शोध आलेख सार– रूढ़गत समाज, परम्पराएँ और दृष्टिकोण तभी परिवर्तित हो सकते हैं जब स्त्री स्वयं इनके प्रति सचेत हो जाय। लेखिका का मत है– ''वह दिन बहुत करीब है जब समाज स्त्री के प्रति अपने क्रूर व्यवहार को न केवल बदलेगा बल्कि उसके प्रति अपना नजरिया खुला रखने पर भी मजबूर होगा।''[10] अर्थात् नारी यदि संकल्प कर ले तो सब कुछ संभव है, वह सभी दशाओं और दिशाओं का रूख अपनी तरफ मोड़ सकती है, आवश्यकता है तो बस दृढ़ इच्छा शक्ति की। इतिहास गवाह है कि संघर्षों का प्रमाण परिवर्तन ही रहा है जो अवश्य ही होकर रहेगा। आज भी समाज में एक बहुत बड़ा जनभाग रूढ़ और रूग्ण सोच के साथ क्रियाशील हैं। स्त्रियों के सामने उनके अधिकारों की रक्षा एक मूल प्रश्न बनकर सामने खड़ी है। महिला मन में पनपते हुए असन्तोष को लेखिकाएँ अपने लेखन के माध्यम से उसे क्रियात्मक साँचे में ढालती नजर आ रही हैं। कथाकार नासिरा शर्मा ने अपने जीवन के अनुभवों तथा आस–पास के परिवेश से कथानक गढ़े हैं जिनका स्वर समसामयिक परिस्थितियों में बदलता गया है। इनके स्त्री पात्र तथा कथानक शोषण से शोषित भी हैं, उनके विरुद्ध भी हैं तथा अपने जीवन मूल्यों के प्रति जागरूक भी हैं।

मुख्य शब्द – नासिरा शर्मा, कहानि, अभिव्यक्त, स्त्री, रूढ़गत समाज, आधुनिक युग संक्रमण, शिक्षा।

आधुनिक युग संक्रमण तथा विभिन्न विमर्शों का युग है। शिक्षा, बदलते परिवेश और नए विचारों ने वर्तमान पीढ़ी को प्राचीन रूढ़ियों और जड़ परम्पराओं से तोड़कर एक नयी विचाराधारा की ओर मोड़ देने का कार्य किया है। ऐसी दशा में रचनाकार अपने लेखन के माध्यम से हमें युग विशेष की परिस्थितियों का अवबोध कराते हैं, जो बहुत कुछ उनके साहित्य के माध्यम से पूरा होता है।

हिन्दी–साहित्य में महिला कथाकारों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है जिनमें 'नासिरा शर्मा' का विशिष्ट स्थान है। इनका लेखन विविधताओं से परिपूर्ण है जिसकी सबसे बड़ी विशेषता है– राष्ट्रीय से लेकर अन्तर्राष्ट्रीय पृष्ठभूमि

को अपने रचनात्मक परिवेश में शामिल करना। साहित्य जगत में इनका आगमन कहानी कला के माध्यम से ही होता है जिसके जरिए इन्होंने विभिन्न समस्याओं के प्रति समाज का ध्यान आकृष्ट किया है।

चूँकि एक महिला कथाकार होने के नाते लेखिका को स्त्री अनुभूतियों की विशेष पहचान है जिसे कथा–साहित्य के माध्यम से इन्होंने सामाजिक फलक पर प्रस्तुत करने का सहज प्रयास किया है। अपने कथा लेखन के विषय में इनका कथन है– ''मैं तो केवल दो हाथ, दो पैर, दो कान, दो आँख, एक दिल और दिमाग वाले इन्सान को पहचानती हूँ। वह जहाँ भी जिस सीमा, जिस परिधि में जीवन की सम्पूर्ण गरिमा के साथ मिल जाए, वही मेरी कहानी का जन्म होता है।''[1]

लेखिका के अब तक नौ कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं जिनमें– 'शामी कागज', 'पत्थरगली', 'संगसार', 'इब्ने मरियम', 'सबीना के चालीस चोर', 'खुदा की वापसी', 'दूसरा ताजमहल', 'इन्सानी नस्ल' और 'बुतखाना' प्रमुख है। इन संकलित कहानियों में नासिरा शर्मा ने सभी सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक आदि मुद्दों के साथ–साथ स्त्रियों की यथार्थ दशा, उनकी मानसिक स्थिति तथा अन्तर्द्वन्द्व से भरे जीवन की यातनाओं का अति सूक्ष्म दृष्टि से विश्लेषण किया है।

नारी पात्रों द्वारा समस्याओं की अभिव्यक्ति कर इन्होंने जड़ मानसिक प्रवृत्तियों पर प्रहार करते हुए भविष्य के तिमिर को मिटाने के लिए उनका उज्ज्वल समाधान ढूँढ़ने का भरसक प्रयास किया है। औरत के परिप्रेक्ष्य में लेखिका का अपना दृष्टिकोण है– ''औरत को लेकर जो संवेदना मेरे अन्दर उपजी थी उसका प्रभाव मुझे समय–समय पर अपने कहे लिखे शब्दों द्वारा होता था कि, औरत अधिक ईमानदार, निष्ठावान, कर्मठ, धैर्यवान और बलिदान करने वाली एक ऐसी जीव है जिसका मुकाबला दुनिया का दूसरा प्राणी नहीं कर सकता है।''[2]

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर लेखन करने के कारण नासिरा जी के कहानी पात्रों का चयन देशी तथा विदेशी दोनों ही पृष्ठभूमि को अपनाकर चलता है। चूँकि नारी की संवेदनाओं, उसकी पीड़ा और व्यथा की कोई सरहद नहीं होती और न ही उसका कोई पैमाना है, इसलिए उनकी अनुभूतियाँ आपस में सदैव मेल खाती हैं जहाँ एक देश दूसरे देश से आक्रांत और भयभीत हैं वहीं सामाजिक दृष्टि से स्त्री की अस्मिता भी टूट कर खण्डों में विभक्त हो रही है। ये कहानियाँ और इनके पात्र इस विभाजित होती मानवता की जीवंत दस्तावेज हैं। इनके विषय में नासिरा शर्मा का वक्तव्य है–

''कहानी इंसान की होती है ओर वह पात्र जो मेरे लेखक मन को छू सके, उसकी चेतना को हिला सके अपनी कहानी लिखवाने का दम रखे ऐसे पात्र का देशी या विदेशी होना कोई फर्क नहीं रखता।''[3] महिलाओं की परेशानियाँ राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय दोनों ही सरोकारों से सम्बन्ध रखती हैं, इसलिए ये कहानियाँ राजनीतिक संज्ञान, समाजशास्त्रीय अध्ययन और मानवीय उत्तरदायित्व की उपज हैं।

लेखिका का प्रथम कहानी संग्रह 'पत्थर गली' जो 1986 में प्रकाशित हुआ है। इस संग्रह की लगभग सभी कहानियाँ मुस्लिम परिवेश की रूढ़िवादी परंपराओं का चित्रण करती हैं। मुस्लिम महिलाओं की पीड़ा और उनके दर्द को संवेदनात्मक अनुभूति की कसौटी पर कसकर उन्हें प्रस्तुत किया गया है। इन्हें पढ़कर यह अनुभव होता है कि, मनुष्य की वास्तविक समस्या धर्म से बढ़कर उसके आपस में उलझे हुए रिश्ते हैं। धर्म–समप्रदाय में बँटकर तो

मानवता खतरे में पड़ती है किन्तु रिश्तों में ही यदि मनुष्य बँट जाय तो वह अस्तित्व विहीन हो जाता है 'बावली' कहानी की नायिका 'सलमा' का जीवन भी ऐसा ही है। दूसरों को सर्वस्व दे देने पर भी मातृत्व सुख न मिल पाने से वह रूढ़ समाज व परिवार की अवहेलना का शिकार होती है। 'ताबूत' कहानी में समाज की निम्न वर्ग के मुस्लिम परिवार की अविवाहित लड़कियों को अभावग्रस्त जीवन की नियति के साथ कुत्सित मानसिक प्रवृत्ति के पारिवारिक शोषण का शिकार होना पड़ता है। 'पत्थर गली' की कथा इस संग्रह की उच्चकोटि की कहानी है, जहाँ सामंती परिवेश में स्त्रियाँ अपने जीवन की कुरबानी देती हैं। वेदों और पुराणों में नारी की महिमा का वर्णन है, उसके विविध रूपों का विवेचन है किन्तु 'सिक्का' कहानी हमें वास्तविक सामाजिक सोच से परिचित कराती है कि– नारी वेश्या का रूप तो ले सकती है किन्तु प्रेम करने का अधिकार उसे नहीं है, बल्कि इस रूप में उसका अस्तित्व उस सिक्के के समान है जो एक व्यक्ति से दूसरे के हाथ में जाता रहता है। इस संग्रह की समग्र कहानियों में समाज में पनपी जर्जर मान्यताओं को उकेरा गया है तथा स्त्री जीवन की जटिलताओं उसकी भावनाओं को भाषा का संस्कार दिया गया है। संग्रह के सम्बन्ध में 'डॉ0 विजय कुमार राउत' का कथन है– ''एक रूढ़ग्रस्त समाज में नारी जाति की घुटन, बेबसी और उनकी मुक्ति की छटपटाहट का यथार्थ चित्रण इसमें मिलता है।''[4]

सामाजिक, धार्मिक व्यवस्थाओं और उनके ठेकेदारों से आजीज अबलाओं का चित्रण 'संगसार' कहानी संग्रह की कहानियों में मिलता है, जिसमें नायक 'अफजल' स्वेच्छाचारी तो हो सकता है किन्तु नायिका 'आसिया' को दोषी मानकर संगसार होने का दण्ड दिया जाता है। मनुष्य न चाहते हुए भी राजनैतिक और सामाजिक परिस्थितियों का दास होता है– 'दरवाज–ए–कजविन' कहानी की 'मरियम' को भी ऐसी ही परिस्थिति का सामना करते हुए अपनी इच्छा के विरुद्ध जाकर वेश्यावृत्ति का पेशा अपनाना पड़ता है और वह इसलिए क्योंकि– औरत का मर्द के खिलाफ जाकर अपने अधिकार के लिए सड़क पर उतरना पुरुष कानून की किताब से बाहर का विषय बन जाता है और ऐसे में नारी जाति पुरुष समाज के हाथ की कठपुतली बनकर रह जाती है। डॉ0 सोनल नंदनूरवाले के शब्दों में– ''मरियम दरवाज–ए–कजविन (नारी मुक्ति केन्द्र) के दरवाजे पर दस्तक देती है।''[5] इस कहानी संग्रह की सभी कहानियाँ राजनीतिक, समाजिक और धार्मिक ठेकेदारों के कुकर्मों से उपजी यन्त्रणाओं का जीवन्त दस्तावेज हैं।

भूख की पीड़ा और विस्थापन की मार झेलती महिलाओं की दुःख की कथा 'इब्नेमरियम' कहानी संग्रह की है। मानवीय संघर्षों में अबला जाति की संवेदनाओं का दखल स्वाभाविक है। 'तीसरा मोर्चा' कहानी इसका प्रमाण है। नायिका का कथन ही व्यवस्था के सन्दर्भ में यह प्रश्न करता है कि– ''क्या वह हिन्दू है ? या मुसलमान या सबसे पहले औरत या सिर्फ औरत ही तब उसे ही क्यों नफरत, घृणा, उन्माद के नाम पर रौंदा जाता है।''[6]

वैधव्य जीवन का निर्वाह तथा प्रेम–विवाह एवं अनमेल–विवाह की कठिनाईयों का विवरण हमें 'शामी कागज' संग्रह की कहानी 'पतझड़ का फूल' में मिलता है। यह एक ऐसी कहानी है जो नारी जीवन को आत्मनिर्भर बनने और स्वस्थ मानसिक निर्णय लेने का संबल देती है। 'शामी कागज' की कथा भी एक ऐसा ही मार्ग आधुनिक नारी जीवन के लिए प्रशस्त करती है जिसके परिप्रेक्ष्य में नायिका 'पाशा' का उससे विवाह के लिए इच्छुक 'महमूद' के लिए कथन है कि– ''मैं भी कोई शामी कागज थोड़े ही हूँ कि जब जरूरत पड़ी, उसे धोकर दूसरा फरमान लिख दिया।''[7]

निश्चय ही यह कथन एक नया दृष्टिकोण पैदा करता है। जरूरी नहीं कि शादी के रंग धुल जाने के बाद अकेली स्त्री अपने जीवन में एकाकी होकर अपने निरर्थक जीवन को सार्थक मार्ग नहीं दे सकती।

एक स्त्री की दूसरी स्त्री संवेदनाओं के प्रति निष्ठुरता का परिचय देती है और जब उसे अपना स्वार्थ नजर आता है वह अपना रंग बदल लेती है ऐसी ही दास्तान को बयान करने वाली कहानी है 'ततईया'। नारी की पवित्रता के विषय में दूसरी नारी दोहरा मानदण्ड क्यों अपनाती है ? इस समस्या से यह कहानी हमें परिचित कराती है। स्त्री के आत्मनिर्भर और स्वाभिमानी स्वरूप का परिचय हमें कहानी 'खुदा की वापसी' से मिलता है। पति–पत्नी के रिश्ते में ऐसी शर्त आ जाय जो उसके जीवन को नारकीय बना दे तो उचित है कि स्त्री भी इनका जवाब सकारात्मक शर्त के माध्यम से दे। नायिका 'फरजाना' भी छल का जवाब चतुरता से देती है। 'खुदा की वापसी' संग्रह के विषय में लेखिका का मत है– ''दरअसल खुदा की वापसी की सभी कहानियाँ उन बुनियादी अधिकारों की माँग करती नजर आती है जो वास्तव में महिलाओं को मिले हुए हैं, मगर पुरुष समाज के धर्म पण्डित मौलवी मौलिक अधिकारों को भी देने के विरुद्ध हैं।''[8]

नासिरा शर्मा जी ने नारी के अर्न्तद्वन्द्वों का चित्रण तो अपनी कहानियो में किया ही है इसके साथ–साथ समाज में फैले ज्वलन्त मुद्दों को भी अपनी लेखनी का प्रमुख विषय बनाया है। ऐसा ही एक विषय है– भ्रूण परीक्षण के माध्यम से लिंग भेद को बढ़ावा देना। 'अपनी कोख' कहानी का कथानक इस समस्या का चित्रण करता है नायिका 'साधना' पहले तो शादी के नाम पर अपने सपनों की कुरबानी देती है और उसके बाद लिंग भेद की समस्या का सामना करती है। अपने वात्सल्य को दो खेमों में न बाँटकर वह अपनी बेटियों के लिए अपने बच्चे (पुत्र) का गर्भपात करवा देती है। भ्रूण परीक्षण पर आधारित अनुमानतः यह प्रथम कहानी है।

आधुनिक युग की विद्रुपताओं और विसंगतियों से स्त्री जगत अछूता नहीं है बल्कि वह इनका शिकार होती जा रही है, अनैतिकता अपने चरम पर है जिसमें फँसकर नारी अपने पतन का कारण स्वयं बनती है। 'प्रोफेशन वाइफ', गली घूम गई, कहानियाँ ऐसी समस्याओं का इसका जीवन्त प्रमाण हैं। स्त्री चाहे तो अपनी अन्धी भावनाओं पर विवेक का अंकुश लगाये और अनर्थ के भँवरजाल से बाहर निकलकर अतीत को बिसरा कर वर्तमान में सुनहरे भविष्य का निर्माण करे।

नारी उदारता की प्रतिमूर्ति है। मुस्लिम धर्म में बहुपत्नीत्व को वैधता दी गयी है। परिवार की खुशी और वंश की चाहत भी इसका कारण है जिसे स्त्रियाँ सह जाती हैं। वर्तमान युग में यह एक विसंगति है कि पति–पत्नी के मध्य तीसरी महिला का प्रवेश आम बात हो चुकी है। 'बुतखाना' कहानी संग्रह की कहानी 'नमकदान' एक ऐसी ही हृदयविदारक व्यथा है जिसकी नायिका की पीड़ा को देखकर डॉ0 सोनल नंदनूरवाले का वक्तव्य है कि– ''हालात को बदलते देख अपनी विवशता का ध्यान रख वह परिस्थिति से समझौता करने के लिए विवश हो जाती है।''[9]

इस प्रकार से नासिरा शर्मा के समग्र कहानियों का यदि हम अध्ययन करें तो यह पूर्णतया स्पष्ट होता है कि– इन्होंने समाज में प्रचलित सर्जनात्मक आन्दोलन से हटकर स्वस्थ और सामाजिक चेतना जागरित करने वाली जीवन विषयक दृष्टिकोण को अपनाया है जहाँ स्त्री चरित्रों की भी प्रधानता रही है। स्त्री–जीवन कई प्रकार की यातनाओं से गुजर रहा है, उसकी प्रतिक्रिया में मानवता का धर्म क्या होना चाहिए, अपने अधिकारों के प्रति

महिलाएँ कितनी सशक्त और सजग हैं; और कितनी ही समस्याएँ ऐसी हैं जिनका समाधान उसे प्राप्त नहीं होता है, इन सभी दृष्टिकोणों को लेखिका ने अपने सृजन कार्य में स्थान दिया है। निश्चयपूर्वक यह कहा भी जा सकता है कि इनकी स्त्री–पात्र व्यवस्था का विरोध तो करती हैं किन्तु दायित्वों के निर्वहन के साथ न कि उनसे मुक्त होकर।

निष्कर्ष स्वरूप यह सर्वविदित है कि रूढ़गत समाज, परम्पराएँ और दृष्टिकोण तभी परिवर्तित हो सकते हैं जब स्त्री स्वयं इनके प्रति सचेत हो जाय। लेखिका का मत है– ''वह दिन बहुत करीब है जब समाज स्त्री के प्रति अपने क्रूर व्यवहार को न केवल बदलेगा बल्कि उसके प्रति अपना नजरिया खुला रखने पर भी मजबूर होगा।''[10] अर्थात् नारी यदि संकल्प कर ले तो सब कुछ संभव है, वह सभी दशाओं और दिशाओं का रूख अपनी तरफ मोड़ सकती है, आवश्यकता है तो बस दृढ़ इच्छा शक्ति की। इतिहास गवाह है कि संघर्षों का प्रमाण परिवर्तन ही रहा है जो अवश्य ही होकर रहेगा। आज भी समाज में एक बहुत बड़ा जनभाग रूढ़ और रूग्ण सोच के साथ क्रियाशील हैं। स्त्रियों के सामने उनके अधिकारों की रक्षा एक मूल प्रश्न बनकर सामने खड़ी है। महिला मन में पनपते हुए असन्तोष को लेखिकाएँ अपने लेखन के माध्यम से उसे क्रियात्मक साँचे में ढालती नजर आ रही हैं। कथाकार नासिरा शर्मा ने अपने जीवन के अनुभवों तथा आस–पास के परिवेश से कथानक गढ़े हैं जिनका स्वर समसामयिक परिस्थितियों में बदलता गया है। इनके स्त्री पात्र तथा कथानक शोषण से शोषित भी हैं, उनके विरुद्ध भी हैं तथा अपने जीवन मूल्यों के प्रति जागरूक भी हैं।

संदर्भ :

1. शामी कागज, नासिरा शर्मा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2009, पृ0 दो शब्द,
2. औरत के लिए औरत, नासिरा शर्मा, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2011, पृ0 6,
3. पत्रकार सदन, पृ0 20
4. कहानीकार नासिरा शर्मा, डॉ0 विजय कुमार राउत, अमर प्रकाशन, कानपुर, संस्करण–2016, पृ0 21
5. नासिरा शर्मा की कहानियों में नारी विमर्श, डॉ0 सोनल नंदनूरवाले, अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण–2011, पृ0 168
6. इब्ने मरियम, नासिरा शर्मा, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–1994, पृ0 372
7. शामी कागज, नासिरा शर्मा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2009, पृ0 97
8. खुदा की वापसी, नासिरा शर्मा, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, चतुर्थ संस्करण–2018, मूल पृष्ठ
9. नासिरा शर्मा की कहानियों में नारी विमर्श, डॉ0 सोनल नंदनूरवाले, अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण–2011, पृ0 143
10. औरत के लिए औरत, नासिरा शर्मा, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2011, मूल पृष्ठ